❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्री श्रीगौरमुखाचार्यजी विरचित

श्रीनारद-नियमानन्द गोष्ठी रहस्यम्

(भाषानुवाद सहित)

卐

अनुवादक :

पं० श्रीवैद्यनाथ झा

व्या०, वे०, न्या० आचार्य

सम्पादक :
जयकिशोरशरण

प्रकाशक :
मदनमोहनशरण पुजारी

प्रथमावृति :
१५००

प्रकाशन तिथि :
अक्षय तृतीया
वि०सं० २०५७

न्यौछावर :
५/- रु०

❀ प्राक्कथन ❀

अनादि माया से अभिभूत मानवों की आपदाओं के निवारणार्थ महत् आचार्यप्रवर देश, काल व परिस्थिति के अनुसार अपने उपदेशामृत से जीवों को परम लक्ष्य का सुबोध कराते हैं। इसी भावना से श्रीनिम्बार्कभगवान् के कृपापात्र श्रीगौरमुखाचार्यजी ने भी 'श्रीनारद-नियमानन्द गोष्ठीरहस्यम्' ग्रन्थ का प्रणयन किया था। प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीनिम्बार्काचार्यजी ने श्रीनारदजी से वेदान्त का रहस्य, मोक्ष का स्वरूप, मुक्ति का उपाय, अनन्य वैष्णवता, वैराग्य व वैराग्य में बाधक तत्त्व तथा उसकी निवृत्ति के उपाय आदि द्वादश महत्त्वपूर्ण प्रश्न किये जिनके बड़े ही सुचारु समाधान देवर्षि द्वारा किये गये।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन परम पूज्य अनन्त श्रीविभूषित ज०गु० श्री "श्रीजी" महाराज द्वारा विरचित तथा 'व्रज आकादमी' जयपुर द्वारा प्रकाशित 'श्रीनिम्बार्कचरितम्' ग्रन्थ के साथ पहले हो चुका है। 'श्रीजी' मन्दिर के पुजारी श्रीमदनमोहनशरणजी की प्रबल भावना थी कि इस प्राचीन ग्रन्थ का भाषानुवाद हो, जिससे सभी श्रद्धालुजन इसका लाभ ले सकें। पुजारीजी के इच्छानुसार राष्ट्रपति पुरस्कृत विद्वत्वर पं० श्रीवैद्यनाथजी झा ने इस ग्रन्थ का अनुवाद कर इसकी उपादेयता और अधिक बढ़ा दी है। सम्प्रदाय के ही नहीं अपितु सभी साधकों के लिए यह लघु ग्रन्थ 'गागर में सागर' की तरह बड़ा ही महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। इसी भावना के साथ सानुवाद 'श्रीनारद-नियमानन्द गोष्ठीरहस्यम्' पुस्तक आप सभी सन्त-प्रेमियों के कर-कमलों में सादर समर्पित है।

रसिकचरणरजाकांक्षी—

जयकिशोरशरण

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य-चरणाम्भोज-चञ्चरीक-
श्रीगौरमुखाचार्य-विरचितं
श्रीनारदनियमानन्द-गोष्ठीरहस्यम्

श्रीनियमानन्दाभिधाद्याचार्यवर्यं श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य-विजिज्ञासिताः श्रीमन्नारददेवर्षि प्रति विविधा-आध्यात्मिक प्रश्नास्तथा च श्रीदेवर्षिवर्य-प्रतिपादितानि प्रत्युत्तराणि तच्चाऽवधेयानि सन्ति, तद्यथा—

श्रीनियमानन्दरूपो भगवान्-श्रीनिम्बार्क :—

प्रश्न : १ भगवन्किं वेदान्तरहस्यम् ?

श्रीदेवर्षिवर्यः– उत्तरम् सर्वेषां क्षेत्रज्ञानां ब्रह्मात्मकत्वस्य तदीयत्वस्य तदायत्तस्थितिप्रवृत्तिकत्वस्य च शाश्वतीहानुभूतिस्तथैवाचेतनवर्गस्यापीति एष एव "यो नः प्रचोदयात्" इति वाक्यार्थः। अत्र सिद्धसाधनं भगवत्प्रचोदनं नाम विषयप्रवणधियां स्वविषये प्रवणीकरणं विश्वकारणं विश्वात्मा स्वयं ज्योतिः चिदचित्प्रकाशको विश्वनियन्ता सवितृदेवपदार्थः।

श्रीनियमानन्दः— को वा मोक्षस्तद्भावापत्तिः को वा तदन्तरं
प्रश्न: २ गोपाय: ?

श्रीदेवर्षिवर्यः— धातृणां सर्वंकामवासनादाहकं रमानिवासस्य
उत्तरम् ब्रह्मादिवरणीय रुक्मवर्णं तद्दर्शनसाक्षात्कारलक्षणं तदन्तरङ्गसाधनं

"यदा पश्य: पश्यते रुक्मवर्णं

कर्त्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम्

तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय निरञ्जन: परमं साम्यमुपैति"

"भिद्यते हृदयग्रिन्थश्छिद्यन्ते सर्वंसंशया: ।

क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे ।।"

"जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीशमस्य महिमानमिति तीव्रशोक:"

"ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदन्तरम् ।"

श्रीनियमानन्दः— भगवन् ! को वा तत्राङ्गोपाय: ?
प्रश्न: ३

श्रीदेवर्षिवर्यः— "ते ध्यान-योगानुगता अपश्यन् देवात्मशक्तिं
उत्तरम् स्वगुणैर्निगूढा:"

"आलोडच सर्वशास्त्राणि विचार्य्यं च पुन: पुन: ।

इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायण: सदा ॥"

श्रीनियमानन्दः- भगवन् ! को वाऽनन्यवैष्णवत्वभावः ?
प्रश्नः ४

श्रीदेवर्षिवर्यः- तदन्यदेवभावराहित्यं तदन्यसाधनराहित्यं
उत्तरम् तदन्यफलराहित्यं तदन्यसम्बन्धराहित्यञ्च ।

श्रीनियमानन्दः- भगवन् ! किं वाऽन्यसम्बन्धराहित्यादि ? किंवा
प्रश्नः ५ तदन्यदेवराहित्यं भगवदन्य साधनराहित्यं तदन्यफलराहित्यम् ?

श्रीदेवर्षिवर्यः- "योऽन्यां देवतामुपास्तेऽन्योऽसावन्यो वाऽहमस्मि न ।
उत्तरम् स वेद यथा पशुः" ।

"तमेकं ध्यायथ आत्मानमन्यावाचो विमुञ्चथ"

"अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्"

"तस्मात्समस्तशक्तीनामाधारे तत्र चेतसः ।
कुर्वन्ति संस्थितिं सा तु विज्ञेया शुद्ध साधारणा ।।"

"शुभाश्रयः सुचित्तस्य सर्वगम्यतयात्मनः ।
त्रिभानातीत गोमुक्तो योगिनां नृपसत्तम ।।"

"अन्ये च पुरुषव्याघ्र चेतसो ये व्यपाश्रयाः ।
अशुद्धास्ते समस्तास्तु देवाद्या कर्मयोनयः ।।"

श्रीनियमानन्दः- का वा तदन्यसाधनविरहता ?
प्रश्नः ६

श्रीदेवर्षिवर्यः- "अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना पर्युपासते ।
उत्तरम् तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।"

"तेषामहं समुद्धर्त्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि न चिरात्पार्थ ! मय्यावेशितचेतसाम् ॥"
"अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।"

श्रीनियमानन्दः– प्रश्नः ७ को वा तदन्यफलविरहः ?

श्रीदेवर्षिवर्यः– उत्तरम् "तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥"
"मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति सोऽर्जुन ॥"
"मन्मनाभव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥"

श्रीनियमानन्दः– प्रश्नः ८ किं या भगवतोऽनन्यसम्बन्धत्वम् ?

श्रीदेवर्षिवर्यः– उत्तरम् "ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।"

श्रीनियमानन्दः– प्रश्नः ९ को वा बन्धो जीवस्य भगवन् ! अनहमास्पदे देहे बुद्धीन्द्रियशरीरादौ, अहंकारः, ममास्मदाभावे पुत्रादौ देहसम्बन्धिनि ममकारश्च कस्तयोर्विषयो गरीयान् ?

श्रीदेवर्षिवर्यः– उत्तरम् स्वतन्त्रसत्ताकवस्तु तयोर्विषयः किंवा स्वातन्त्र्याधिकरणं, "एतस्यैवाक्षरस्य प्रशासने गार्गिसूर्याचन्द्रमसौ विधृतौऽतिष्ठत

"भीषास्माद्वातः पवते भीषोदेतिसूर्यः ।
भीषास्मादग्निश्चेन्द्रश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः ॥"

"अपाणिपादो जवनो गृहीता पश्यत्यचक्षुः स श्रृणोत्यकर्णः ।"

"अनिन्द्रियोऽपि सर्वतः पश्यति सर्वतः श्रृणोति सर्वतः आदत्ते सर्वगः सर्वगस्तिष्ठतीति"

"एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेताः केवलो निर्गुणश्च ।" इति

"सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनञ्च ।"

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥"

"तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च"

"सुखं दुःखं भवोभावो भयं चाभयमेव च ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥"

"स एव विश्वात्मत्वेनाहं पदार्थः ।"

"अंशित्वेन च ममास्पदः ।"

श्रीनियमानन्दः– किं वा भगवन् ! वैराग्यम् ?

प्रश्नः १०

श्रीदेवर्षिवर्यः– अहंकार-ममकार-विषयकतत्पक्षप्रवणेन्द्रियार्थसंकोचो
उत्तरम् गरीयान् ।

श्रीनियमानन्दः– को वैराग्यप्रतिबन्धः ?
प्रश्नः ११

श्रीदेवर्षिवर्यः– इन्द्रियादिलौल्यं बन्धहेतुः, अनादिर्देवी भगवदीया
उत्तरम् माया तद्वशेन विश्वात्मनो भगवतोऽन्यत्र द्वितीय
वस्तुनिस्वतन्त्रसत्ताकस्वामिनेवशः, तेन
तिरोहितषाड्गुण्य-भवोऽतिसंकुचितज्ञानगुणकः,
"द्वितीयाद्वै भयं भवति"

श्रीनियमानन्दः– को वा तन्निवृत्यसाधारणोपायो निर्हेतुकः ?
प्रश्नः १२

श्रीदेवर्षिवर्यः– श्रीगोविन्ददामोदर-कृपाकटाक्षावलोकनोक्त्याज्ञप्तगु
उत्तरम् रूपसत्त्या तदुपदेशक्रमानुष्ठानेन भगवत्प्रावण्यमेता-
वान्सर्वशास्त्रार्थो जन्मान्तरानपेक्षे श्रीपुरुषोत्तम-
साक्षात्कारः ।

इति श्रीमन्नारद-नियमानन्दसंवादे
गोष्ठीरहस्यम् ।

श्रीनारद-नियमानन्द गोष्ठीरहस्यम्

(भाषानुवाद)

श्रीभगवान् निम्बार्काचार्य-चरणकमलचञ्चरीक (भ्रमर) श्रीगौरमुखाचार्यजी द्वारा विरचित श्रीनारद-नियमानन्द की ऐकान्तिक गोष्ठी का रहस्य।

श्रीनियमानन्द अपर नामक आद्याचार्य भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज द्वारा जिज्ञासित (पूछे गये) श्रीमान् देवर्षिनारद के प्रति अनेक आध्यात्मिक प्रश्नों एवं देवर्षि श्रीनारदजी द्वारा दिये गये उनके उत्तरों का यह संग्रह, जो ध्यान देने योग्य है जैसा कि—

श्रीनिम्बार्क भगवान् का पहला प्रश्न ?

प्रश्न १— भगवन् ! वेदान्त का रहस्य क्या है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य—समस्त क्षेत्रज्ञों (जीवों) ब्रह्मात्मकत्व, तदीयत्व एवं ब्रह्माधीन स्थिति प्रकृतिकत्व तथा अचित वर्ग (प्राकृत, अप्राकृत, काल) का भी ब्रह्मात्मकत्व आदि की भी शाश्वत अनुभूति ही वेदान्त का रहस्य है। यही गायत्री घटक 'यो नः प्रचोदयात्' इस वाक्य का अर्थ है। यहाँ विषयाभिमुख वहिर्मुख प्राणियों का भगवद् विषय में उन्मुखीकरण ही भगवत् प्रचोदन है। और विश्वकारण, विश्वनियन्ता चित्

अचित् प्रकाशक स्वयं ज्योति परमात्मा ही सविता पदार्थ है।

प्रश्न २– श्रीनियमानन्द
प्रभो मोक्ष क्या है! तद्भावापत्ति और उसका अन्तरङ्ग उपाय क्या है?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–अखिलकामनाओं की वासनाओं का उन्मूलन, ब्रह्मा आदि समस्त देवताओं द्वारा वरणीय तथा कमनीय कान्ति रमा निवास (श्रीराधावल्लभ) प्रभु की उपरोक्त अनुभूति जैसाकि उपनिषदो में कहा गया है—

'यदा पश्य: पश्यते…………

अर्थात् जीव जब कमनीय कान्ति, वेदैक वेद्य, अखिल जगदभिन्न निमित्तोपादन कारण, अखिल ऐश्वर्य-शाली परम पुरुष परमात्मा का साक्षात्कार करता है, तब वह समस्त पुण्य-पापों का विनाशकर परमात्मा के साथ परम साम्य को प्राप्त करता है। ब्रह्म साक्षात्कार करने के पश्चात् उसकी हृदय की गांठ छिन्न हो जाती है, उसके सारे संशय विनष्ट हो जाते हैं और उसके जन्म-जन्मान्तर के समस्त शुभ-अशुभ कर्म सञ्चित क्रियमाण आदि विलीन हो जाते हैं।

"भक्ति के द्वारा आराधित उस ईश्वर का जब जीव साक्षात्कार करता है, तब वह उसकी महिमा

को प्राप्त होता है तथा समस्त शोकों से रहित हो जाता है।"

"तब वह तत्त्वतः मुझे जानकर मेरे धाम को प्राप्त हो जाता है।"

प्रश्न ३– श्रीनियमानन्द भगवन् ! उसके लिए अङ्ग उपाय क्या है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–"वे साधक ध्यान तथा योग के प्रभाव से उस निगूढ़ तत्त्व का साक्षात्कार करता है"

"समस्त शास्त्रों के आलोड़न-चिन्तन मनन के द्वारा यही निष्कर्ष निकलता है कि एक मात्र श्रीसर्वेश्वर ही परम ध्येय है।"

प्रश्न ४– श्रीनियमानन्द भगवन् ! अनन्य वैष्णवता क्या है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–अन्य देवता (श्रीकृष्ण से अन्य) की भावना से रहित होना, श्रीकृष्ण की कृपा के अतिरिक्त अन्य साधन की अपेक्षा न करना, श्रीकृष्ण के अतिरिक्त अन्य फल की कामना न रखना तथा श्रीकृष्ण से अन्य किसी के साथ किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध न रखना ही "अनन्य-वैष्णवता" है।

प्रश्न ५– नियमानन्द भगवन् ! अन्य देवताओं का सम्बन्ध राहित्य क्या है ? अथवा अन्य सम्बन्ध राहित्य क्या है ? अन्य साधन राहित्य क्या है, तथा श्रीकृष्ण से अतिरिक्त फल राहित्य क्या हैं ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–"जो किसी अन्य देवता की उपासना करता है या अपने को प्रभु से अन्य समझता है वह पशुतुल्य है, वह परमात्मा को नहीं जानता है।" "केवल एकमात्र उन्हीं का ध्यान करो। अन्य बातों को छोड़ दो" "ऐसे अन्य देवताओं के आराधक अल्पबुद्धि साधकों का फल विनाशी होता है" "समस्त शक्तियों के आधार उस परमात्मा में जो चित्त को लगाते हैं, वही शुद्ध धारणा है, ऐसा जानना चाहिये" "हे राजन् ! योगियों के शोभन चित्तवाले आत्मा का मंगलमय आश्रय परमात्मा होते हैं"

'हे पुरुष व्याघ्र ! जिस साधक का चित्त एकनिष्ठ नहीं है, भिन्न-भिन्न देवता में समाश्रित है, वे सभी अशुद्ध हैं, और वे कर्म योनि होते हैं।"

प्रश्न ६– श्रीनियमानन्द प्रभो ! श्रीकृष्णातिरिक्त अन्य साधन राहित्य क्या है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–"जो अनन्य-भाव से मेरा ध्यान करते हुए मेरी उपासना करते हैं, ऐसे नित्य मुझमें संलग्न प्राणियों का मैं योग-क्षेम विधान करता हूँ। (उसकी भरण-पोषण की व्यवस्था मैं करता हूँ)

"जो अहर्निश मुझमें ही अपने चित्त को लगाए रहते हैं। पार्थ ! ऐसे अनन्य अनुरागी को मैं अतिशीघ्र संसार सागर से पार उतार देता हूँ।"

"अर्जुन ! मैं तुझ शरणागत को सब पापों से छुटकारा दिला दूंगा। तुम सोच मत करो।"

प्रश्न ७– श्रीनियमानन्द भगवान् से अतिरिक्त अन्य फल का अभाव क्या है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–"अर्जुन ! मैं उस अनन्य अनुरागी भक्त के ऊपर अनुग्रह करने के लिये उसके अज्ञान जनित अन्धकार का उसके हृदय में ज्ञान का दीपक जलाकर नाश कर देता हूँ।"

"सदा मेरे लिए कर्म करे, सदा मेरा परायण बना रहे, मेरा भक्त हो, आसक्ति कहीं नहीं करे, ऐसा होकर यदि कोई व्यक्ति सभी प्राणियों में बैर-भाव से रहित होता है, तो अर्जुन, वैसा व्यक्ति मुझे प्राप्त करता है।"

"अर्जुन ! मुझमें मन लगा दो, मेरा भक्त बन जाओ, मेरी पूजा करो, मुझे नमस्कार करो, मैं सत्य प्रतिज्ञा करके कहता हूँ, तब तुम मुझे ही प्राप्त करोगे क्योंकि तू मेरा प्यारा है।"

प्रश्न ८– श्रीनियमानन्द प्रभो ! अनन्य सम्बन्ध क्या है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–"अर्जुन ! यह जीव मेरा ही सनातन अंश है।"

प्रश्न ९– श्रीनियमानन्द (क) भगवन् ! जीव का बन्धन क्या है ?

(ख) अहंकारास्पद से भिन्न देह, बुद्धि, इन्द्रिय तथा शरीर आदि में अहंकार तथा ममतास्पद

भिन्न पुत्र आदि देह सम्बन्धियों में ममकार, इन दोनों में कौन विषय श्रेष्ठ है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–उन दोनों का विषय स्वतन्त्र सत्ता वाली वस्तु है किंवा स्वातन्त्र्य का अधिकरण ? जैसाकि कहा है— "अये। गार्गी ! इसी अविनाशी परमात्मा के शासन में सूर्य और चन्द्रमा यथा स्थान स्थित होकर कार्यरत रहते हैं।"

"इसी परमात्मा के भय से वायु बहती है, सूर्य उदित होता है; एवं अग्नि तथा सूर्य चन्द्रमा अपने-अपने व्यापार में संलग्न रहते हैं।"

"वह परमात्मा बिना हाथ पैर के चलता और ग्रहण करता है। बिना आँख के देखता है और बिना कान सुनता है।"

"बिना इन्द्रिय के सब ओर देखता है, सब सुनता है, चारों ओर ग्रहण करता है, सब जगह जाता है सब जगह रहता है।"

"वह परमात्मा एक है। सम्पूर्ण प्राणियों में अन्तर्हित है, सर्वव्यापी है, सम्पूर्ण भूतों की अन्तरात्मा है, सबके शुभ-अशुभ कर्म का साक्षी है, सबके हृदय में निवास करता है, सबका साक्षी है, चेतन व अद्वितीय है तथा प्राकृत गुणों से रहित है।"

"मैं सबके हृदय में निवास करता हूँ। मेरे

द्वारा प्राणियों को स्मृति, ज्ञान एवं संशय का निवारण होता है।"

"हे अर्जुन ! ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में निवास करता है और माया के द्वारा कठपुतली की तरह सबको नचाता है।"

"सुख, दुःख, भव, भाव, भय तथा अभय ये सभी भाव पृथक्-पृथक् रूप में मेरे द्वारा ही प्राणियों को प्राप्त होते हैं।"

"वही विश्वात्मा रूप में अहं पदार्थ है।"

"अंशीरूप में ममास्पद होता है।"

प्रश्न १०– श्रीनियमानन्द — भगवन् ! वैराग्य क्या वस्तु है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–अहंकार, ममकार विषयक तत्परायण इन्द्रियार्थ का संकोच ही वैराग्य पदार्थ है।

प्रश्न ११– श्रीनियमानन्द — वैराग्य का प्रतिबन्ध क्या है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–इन्द्रियों की विषय लोलुपता बन्धन का हेतु है। भगवान् की माया अनादि देवी है। उसके कारण विश्वात्मा भगवान् के अतिरिक्त वस्तु में स्वतन्त्र सत्ता सम्बन्धी अपना अभिनिवेश भी वैराग्य का कारण है।"

प्रश्न १२– उसकी निवृत्ति का असाधारण अहैतुक उपाय क्या
श्रीनियमानन्द है ?

उ० श्रीदेवर्षिवर्य–भगवान् श्रीदामोदर गोविन्द की कृपा-कटाक्ष प्राप्त होने पर श्रीगुरु शरणागति प्राप्त होती है। तत्पश्चात् श्रीगुरुदेव के उपदेशानुसार भक्ति साधना के अनुष्ठान करने से साधक में भगवत् प्रवणता आती है, इस तरह अखण्ड भगवच्चिन्तन जन्मान्तर की अपेक्षा के बिना श्रीपुरुषोत्तम का साक्षात्कार हो जाता है। यही सभी शास्त्रों का सिद्धान्त है रहस्य है।

इस प्रकार श्रीमान् नारद एवं श्रीनियमानन्द महाराज के संवाद के रूप में दोनों महानुभावों की एकान्त गोष्ठी का रहस्य समाप्त हुआ।

श्रीनिम्बार्क भगवान् श्रीनारद भगवान् की स्तुति करते हैं ।

श्लोक–भवजलनिधिमग्नं जीवजातं निरीक्ष्य,
परमकरुणमूर्तिः श्रीमुकुन्दो महीयान् ।
कृत मुनिवर मूर्तिः पंचरात्रं वितन्वन्,
स जयति गुरुवर्य्यो नारदो नारदाता ॥

संसार सागर में निमग्न जीव समूह को देखकर करुणामूर्ति भगवान् मुकुन्द ने देवर्षि श्रीनारद का अवतार धारण किया और संसार में पाँचरात्र शास्त्र का विस्तार किया। उन भक्त प्राणियों के अज्ञान को दूर करने वाले गुरुवर्य श्रीनारद भगवान् की जय हो।

नारंतमोद्यतिहियः स्वजनानुकंपी,
नारं च ज्ञान मखिलं प्रददाति भूरि ।
नारं प्रपन्न हृदयं प्रददौ दयालु,
स्तं नारदं गुरुवरं शरणं प्रपद्ये ॥

जो प्राणियों के अज्ञान को दूर करते हैं, जिनकी अपने जनों पर सदा अनुकम्पा बनी रहती है, मानव सम्बन्धी समस्त ज्ञान प्रदान करने में जो समर्थ हैं, जो परम दयालु हैं तथा जिन्होंने प्रपन्न भक्तों के लिये कोमल ज्ञान प्रदान किया है, ऐसे गुरुवर्य श्रीनारद भगवान् की हम शरण ग्रहण करते हैं।

उद्धारणार्थं स्वपदानुगानां
निबद्धकक्षं मुनिवर्य रूपं ।
कारुण्य वात्सल्य दयानिधानं
वीणाधरं नारदमीशमीडे ।।

जिन्होंने अपने चरणानुगामी भक्तों के उद्धार के लिये कमर कस ली है, जो कारुण्य वात्सल्य तथा कृपा के निधान हैं जो सदा वीणा पर हरिगुण गायन करते रहते हैं, ऐसे मुनिश्रेष्ठ गुरुवर श्रीनारद भगवान् की हम स्तुति करते हैं।

भक्ति ज्ञान विरागान्य कलिना जर्जरी कृतान् ।
तारुण्यं प्रापयामास तं श्रीनारद माश्रये ।।

कलिकाल के प्रभाव से हुए जर्जरीभूत भक्तिज्ञान तथा वैराग्य को जिन्होंने तारुण्य प्रदान किया, उन श्रीनारद भगवान् का हम आश्रय ग्रहण करते हैं।

ज्ञात्वा ज्ञान विरागभक्ति सकलं कालेन जीर्णि कृतम् ।
वात्सल्यादि गुणार्णवश्च भगवान् देवर्षि रूपं दधत् ।।
तारुण्य प्रददौ दयाख्य सुधया तेभ्यो मुकन्दो गुरुः ।
तं पारं प्रकृतेर्व्रजामि शरणं वीणाधरं नारदम् ।।

काल के द्वारा जीर्णता को प्राप्त हुए जानकर वात्सल्यादि गुणों के सागर श्रीहरि ने देवर्षि नारद का रूप धारण किया और और अपनी दया दृष्टि रूपी सुधा वृष्टि के द्वारा उन्हें तारुण्य वय प्रदान किया। ऐसे प्रकृति पर भगवान वीणावादन परायण श्रीनारदजी की हम शरण ग्रहण करते हैं।

निखिल महीमण्डलाचार्य चक्रचूड़ामणि सर्वतन्त्रस्वतन्त्रान्तानन्त
श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति
श्री 'श्रीजी' श्री
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज
द्वारा विनिर्मित

❀ श्रीसर्वेश्वर प्रातः स्तव ❀

ब्रह्मेन्द्रवृन्दारकवन्दिताय वृन्दाटवीधामविराजिताय ।
सर्वेश्वराय श्रुतिगोचराय प्रातर्नमस्ते प्रणतप्रियाय ॥१॥

सनत्कुमारादिकसेविताय देवर्षि-निम्बार्कसमर्चिताय ।
सर्वेश्वराय श्रुतिगोचराय प्रातर्नमस्ते प्रणतप्रियाय ॥२॥

श्रीराधिकावल्लभ माधवाय चित्राऽऽदिसख्यावलिरञ्जिताय ।
सर्वेश्वराय श्रुतिगोचराय प्रातर्नमस्ते प्रणतप्रियाय ॥३॥

अनन्तचिन्मङ्गलविग्रहाय सर्वार्थविद्यावरसम्प्रदाय ।
सर्वेश्वराय श्रुतिगोचराय प्रातर्नमस्ते प्रणतप्रियाय ॥४॥

प्रातः स्तोत्रं सुधापूर्णं सर्वेश्वर प्रभोरिदम् ॥
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

श्रीमद्भागवत सप्तम स्कन्ध अध्याय ९ के ५० वें श्लोक में भक्तशिरोमणि प्रह्लाद ने श्रीनृसिंह भगवान् की स्तुति करते हुये बताया है कि—

तत्तेऽर्हत्तम नमः स्तुतिकर्मपूजाः
कर्मस्मृतिश्चरणयोः श्रवणं कथायाम् ।
संसेवया त्वयि विनेति षडङ्गया किं
भक्तिं जनः परमहंसगतौ लभेत ॥
(भा० ७/९/५०)

प्रभो ! आपकी सेवा के छः अङ्ग हैं—नमस्कार, स्तुति, समस्त कर्मों का समर्पण, सेवा-पूजा, चरण-कमलों का चिन्तन और लीला कथा का श्रवण। इस षडङ्ग-सेवा के बिना आपके चरण-कमलों की भक्ति कैसे प्राप्त हो सकती है। भक्ति बिना आपकी प्राप्ति कैसे होगी।

★

पुस्तक प्राप्ति स्थान—
श्री 'श्रीजी' की बड़ी कुञ्ज
प्रताप बाजार, वृन्दावन (मथुरा) उ०प्र०

मुद्रक : श्रीसर्वेश्वर प्रेस, वृन्दावन